कार्यालय अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस (अपराध) राजस्थान, जयपुर

(जन सम्पर्क प्रकोष्ठ)

प्रेस नोट

आर.सी.सी.एफ. साइबर फोरेसिंक टुल पर एक दिवसीय कार्यशाला

जयपुर 28 नवम्बर। विशिष्ठ महानिदेशक पुलिस प्रशासन एवं कानून व्यवस्था श्री नवदीप सिंह ने कहा अपराधों पर अकुश लगाने के लिए साइबर क्राईम से सम्बन्धित अनुसंसाधनों में डिजिटल साक्ष्य को पहचाने, इक्ट्ठा एवं संरक्षित करने की आवश्यकता है, जिससे अपराधियों को पकडने में आसानी रहेगी। उन्होने साइबर फोरेसिंक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें तकनीकी रूप से साधन सम्पन होने की जरूरत है। उन्होने राजस्थान पुलिस को आधुनिक सॉफ्टवेयर/टुल्स की आवश्यता एवं ऐसे मानवीय संसाधन भी हो जो तकनीकी रूप से प्रशिक्षित एवं सक्षम हो की आवश्यकता जताई।

आज पुलिस मुख्यालय के सभाकक्ष में Centre for Development of Advanced Computing (CDAC) Thiruvananthapuram के सौजन्य से "Cyber Forensic and Demonstriation of Indigenously Developed Cyber Forensic Tools" पर एक दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन विशिष्ठ महानिदेशक पुलिस, प्रशासन, कानून एवं व्यवस्था, श्री नवदीप सिंह ने किया। साइबर फोरेसिंक की तकनीक बढते हुए अपराधों को रोकने के लिए सार्थक सिद्ध होगी इसे अपनाने हेतू उन्होने पुलिस अधिकारियों से अपेक्षा की।

श्री नवदीप सिंह ने राजस्थान पुलिस को फोरेसिंक लेब की आवश्यकता बताते हुए कहा कि डिजिटल सबूत का अनालिसिस करने के लिए लैब की जरूरत है। उन्होने कहा कि राजस्थान पुलिस को वैज्ञानिक तकनीकी से साइबर क्राईम के अनुसंधान एवं अपराधियें के पकडने में सार्थक सिद्ध होगा।

सीडैक के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री सी. बालन ने सीडैक द्वारा स्वदेश में ही तैयार किये सॉफ्टवेयरस जैसे डिस्क फोरेसिंक के लिए साइबर चैक स्वीट, साइबर फोरेसिंक टुल्स जैसे विनलिप्ट और नेट वर्क फोरेसिंक उपकरण जैसे नेट फोर स्वीट के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होने कम्प्यूटर, मोबाईल के माध्यम से इन्टरनेट, ईमेज में छेडखानी, डाटा से आदमी की लोकेशन व जानकारी एवं नेटवर्किंग से मेल से नये सॉफ्टवेयर की जानकारी ले सकते है।

वरिष्ठ प्रोजेक्ट इंजिनियर श्री सरिलि जॉसफ फर्नाडेज ने कार्यशाला को सम्बोधित करते मोबाईल फोरेसिंक के लिए विकसित सॉफ्टवेयर, मोबाईल चैक सिम एक्टेक्टर और सीडीआर एनेलाईजर के बारे में बताया। साथ ही उन्होने हाईपर टुल, टुइमेजर एवं टुट्रेवलर के बारे में जानकारी दी। उन्होने कहा कि नये सॉफ्टवेयर से अपराधियों को रोकने के लिए पुलिस व्यवस्था में एक नई शक्ति का संचार होगा।

कार्यशाला में मंथन के दौरान सभी अनुसंधान अधिकारियों को साइबर फोरेसिंक एवं साइबर टुल्स के बारे में आवश्यक जानकारी दी गई यह बात सामने आयी कि उनके उपयोग के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षिण दिया जाना चाहिए, जिससे साइबर अपराधों की अनुसंधान की गुणवता में सुधार लाना संभव हो सकेगा।

इस अवसर पर अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस श्री पीके सिंह, श्री नन्द किशोर, श्री सुनील मेहरोत्रा, श्री राजीव दासोत, श्री एलमएल लाठर, श्री जसवन्त सम्पतराम, श्री डीएस दिनकर, श्री यूआर साहू, श्री हेमन्त पुरोहित, श्री ठण्डी लाल मीणा समेत वरिष्ठ पुलिस अधिकारी एवं सी डैक के फोरेसिंक वैज्ञानिक मौजूद थे।

चांदोलिया/मनीष/सन्तरा/1644/2014

नोटः– उक्त प्रेस नोट www.police.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध है।